

## भारत की विकास-रोज़गार वसिगतिका समाधान

यह संपादकीय 18/11/2024 को 'द हट्टि बिज़नेस लाइन' में प्रकाशित "Jobs: Bridging the gap between growth and quality" पर आधारित है। यह लेख भारत की आर्थिक वृद्धि के वरिधाभास को सामने लाता है, जहाँ बढ़ती GDP गुणवत्तापूर्ण रोज़गार में तब्दील होने में वफिल रहती है, कम कार्यबल भागीदारी, व्यापक अनौपचारिक नौकरियों और सीमित कौशल विकास समानता एवं स्थिरता को खतरे में डालते हैं।

### प्रलिमिस के लिये:

[रोज़गार, श्रम बल भागीदारी दर, युवा बेरोज़गारी, GDP वृद्धि दर, भारत रोज़गार रिपोर्ट- 2024, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24, श्रम संहिताएँ, आजीविका और उद्यम हेतु लाभवंचित लोगों की सहायता \(समाइल\), PM-DAKSH \(प्रधानमंत्री दक्षता और कुशलता सम्पन्न\) योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, स्टार्ट-अप इंडिया योजना](#)

### मेन्स के लिये:

भारत में रोज़गार और नौकरी सृजन की वर्तमान स्थिति, रोज़गार और नौकरी सृजन से संबंधित मुद्दे।

भारत की प्रभावशाली आर्थिक वृद्धि एक परेशान करने वाली वरिधाभास को छुपाती है: इसके **कार्यबल के लिये गुणवत्तापूर्ण रोज़गार सृजन** की कमी। **40% कामकाजी उमर के व्यक्ति श्रम बाज़ार से वमिख हैं** और महिलाओं की भागीदारी कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों तक सीमित है, जिससे **रोज़गार की चुनौती गंभीर** हो गई है। अनौपचारिक कार्य का बोलबाला है, सामाजिक सुरक्षा दुर्लभ है तथा अधिकांश लोगों के लिये औपचारिक प्रशिक्षण दुर्लभ है। एक तकनीकी महाशक्ति होने के बावजूद भारत के **एक त्हाई युवा न तो पढाई कर रहे हैं और न ही काम कर रहे हैं**। सामाजिक न्याय और सतत् विकास सुनिश्चित करने के लिये **विकास तथा समानता के बीच** इस अंतर को समाप्त करना आवश्यक हो गया है।

## भारत में रोज़गार और नौकरी सृजन की वर्तमान स्थिति क्या है?

- **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR):** सत्र 2017-18 में समग्र **श्रम बल भागीदारी दर** (15 वर्ष और उससे अधिक) 49.8% से बढ़कर सत्र 2023-24 में **60.1%** हो गई है।
  - **वेतनभोगी रोज़गार** में महिलाओं की हसिसेदारी में गरिवट आई है, जबकिस्वरोज़गार में वृद्धि हुई है (सत्र 2017-18 में 51.9% से सत्र 2023-24 में **67.4%** तक)।
  - कई महिलाएँ **घरेलू उद्यमों में अवैतनिक सहायकों** या **स्वयं के खाते पर काम करने वाली श्रमिकों के रूप में कार्यरत हैं**, जिससे नौकरी के सीमित विकल्प उजागर होते हैं।
- **अनौपचारिक रोज़गार:** कार्यबल का एक बहुत बड़ा हसिसा अनौपचारिक उद्यमों (स्वामित्व और साझेदारी) में नियोजित है।
  - सत्र 2023-24 में, **73.2% श्रमिक अनौपचारिक फर्मों में कार्यरत** होंगे, जो सत्र 2022-23 के 74.3% से मामूली गरिवट है, लेकिन सत्र 2017-18 के 68.2% से अभी भी अधिक है।
- **रोज़गार का क्षेत्रीय वितरण:** कृषि में श्रमिकों की हसिसेदारी सत्र 2017-18 में 44.1% से बढ़कर **2023-24 में 46.1%** हो गई, जिससे कृषि पर निर्भरता में कमी की दीर्घकालिक प्रवृत्ता में परिवर्तन हुआ है।
  - **वनरिमाण क्षेत्र** में रोज़गार स्थिर हो गया है, जो सत्र 2023-24 में लगभग **11.4%**, जबकिसत्र 2021-22 में यह 11.6% था।
- **बेरोज़गारी के रुझान:**
  - समग्र **बेरोज़गारी दर (15 वर्ष और उससे अधिक) वर्ष 2017-18 में 6% से घटकर वर्ष 2023-24 में 3.2%** हो गई है।
    - **युवा बेरोज़गारी दर** सत्र 2017-18 में 17.8% से घटकर सत्र 2023-24 में 10.2% हो गई है, फरि भी यह उच्च बनी हुई है।
  - **शक्ति कार्यबल में बेरोज़गारी अनुपातहीन रूप से अधिक है** तथा माध्यमिक स्तर या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को नौकरी पाने में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

## भारत की आर्थिक वृद्धि गुणवत्तापूर्ण रोज़गार सृजन में क्यों वफिल हो रही है?

- **रोज़गार सृजन में संरचनात्मक मुद्दे:** सत्र 2024-25 में लगभग 6.5-7% की सुदृढ़ **GDP वृद्धि** के बावजूद, भारत का रोज़गार सृजन इसके

आर्थिक वसतिार के साथ तालमेल नहीं रख पाया है।

- सरकार के अपने श्रम बल सर्वेक्षणों के अनुसार, देश का श्रमिक-जनसंख्या अनुपात सत्र 2011-12 में **38.6%** से घटकर सत्र **2022-23** में **37.3%** हो गया है, जो एक चिंताजनक प्रवृत्ति को दर्शाता है जहाँ आर्थिक विकास बढ़ते कार्यबल के लिये पर्याप्त नौकरियों का सृजन नहीं कर रहा है।
- **जैसा कि भारत रोजगार रिविस्ट- 2024** में उल्लेख किया गया है, उत्पादन प्रक्रियाएँ तेज़ी से पूंजी-प्रधान और श्रम-बचत वाली होती जा रही हैं, जिससे रोजगार सृजन के प्रयास जटिल हो रहे हैं।
- **कौशल वसिगत संकट:** भारत की शक्ति प्रणाली से लगातार ऐसे सनातक तैयार हो रहे हैं जिनके कौशल उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं, जिससे बेरोजगारी और रक्ति पदों की एक साथ वचिक्ति सथति बढ़ती जा रही है।
  - व्यावहारिक कौशल की तुलना में सैधांतिक ज्ञान पर अधिक ध्यान दिये जाने से एक ऐसा कार्यबल तैयार हो गया है, जिसे उद्योग के लिये तैयार होने से पहले महत्त्वपूर्ण पुनर्रशक्तिण की आवश्यकता है।
  - **इंजीनियरिंग सनातकों में रोजगार योग्यता 60% से अधिक है, जनिमें से केवल 45% ही उद्योग मानकों को पूरा कर पाते हैं।**
- **रोजगार में लैंगिक असमानताएँ:** भारत को अपने श्रम बाज़ार में लैंगिक असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। जहाँ पुरुष श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) **78.3%** है, वहीं महिला LFPR केवल **41.3%** पर है जो बहुत पीछे है।
  - यह वसिगत न केवल संभावति कार्यबल को सीमति करती है, बल्कि आधी आबादी की प्रतभिा और कौशल का पूरण उपयोग न करके आर्थिक विकास को भी बाधति करती है।
  - महिला कार्यबल भागीदारी में गरिवट उन प्रणालीगत बाधाओं को उत्पन्न करती है जो महिलाओं को श्रम बाज़ार में प्रवेश करने या उसमें बने रहने से रोकती है।
  - इन असमानताओं को दूर करना नौकरी की गुणवत्ता में सुधार लाने तथा यह सुनिश्चिक्ति करने के लिये महत्त्वपूर्ण है कि आर्थिक विकास से समाज के सभी वर्गों को लाभ मलि।
- **MSME की तुलना में कॉर्पोरेट प्रोत्साहन पर नीतगित ध्यान:** सरकारी नीतियों ने प्रोत्साहन और सब्सिडी के माध्यम से बड़े नगिनों का पक्ष लया है तथा प्रायः **सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME)** की उपेक्षा की है, जो रोजगार सृजन के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
  - प्रत्यक्ष वदिशी नविश को आकर्षति करने पर ध्यान केंद्रति करने से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में पर्याप्त रोजगार सृजन नहीं हो पाया है।
  - **उदाहरण के लिये, हालाँकि मेक इन इंडिया** जैसी पहलों के कारण वनिरिमाण क्षेत्र में कुछ वृद्धि देखी गई है, लेकिन इसका लाभ वभिनिन क्षेत्रों में रोजगार के वविधि अवसरों को बढ़ावा देने के बजाय **बड़ी कंपनियों को ही अधिक मलिा है।**
  - **आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24** में MSME की चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया, जसिमें औपचारिकीकरण, वतितीय अभगिम, बाज़ार संपर्क, प्रौद्योगिकी अंगीकरण, डजिटिलीकरण, बुनयादी ढाँचा और कौशल अंतराल शामिल हैं।
- **डजिटल व्यवधान और पारंपरिक नौकरी वसिथापन:** भारत की अर्थव्यवस्था का तीव्र डजिटिलीकरण पारंपरिक रोजगार पैटर्न को इतनी तेज़ी से बाधति कर रहा है कि नई नौकरी सृजन से इसकी भरपाई नहीं हो सकती।
  - जबकि डजिटल परिवर्तन उच्च-कुशल अवसरों का सृजन करता है, यह एक साथ **कई मध्यम-कुशल नौकरियों को समाप्त कर देता है जो ऐतहासिक रूप से स्थरि रोजगार प्रदान करते थे।**
  - गगि इकॉनमी के विकास से अनुकूलता तो बढ़ी है, लेकिन पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा के बनिा बड़े पैमाने पर अनश्चिक्ति रोजगार का सृजन हुआ है।
  - वर्ष 2023 में गगि इकॉनमी श्रमिकों की संख्या 7.7 मिलियन तक पहुँच गई, लेकिन भारत में **77% से अधिक गगि श्रमिक सालाना 2.5 लाख रुपए से कम कमाते हैं।**
- **नीति कार्यान्वयन अंतराल:** रोजगार सृजन के लिये भारत की महत्त्वाकांक्षी नीतियाँ केंद्र और राज्यों के बीच खराब कार्यान्वयन एवं समन्वय से ग्रस्त हैं।
  - कागज़ पर व्यापक होते हुए भी **श्रम संहिताएँ**, राज्य स्तरीय वलिंब और नौकरशाही बाधाओं के कारण बड़े पैमाने पर क्रयान्वति नहीं हो पाई है।
  - इसके अलावा, अनौपचारिक कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा इन संहिताओं के दायरे से बाहर है, जसिसे उनकी पहुँच सीमति हो जाती है।
- **क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन:** आर्थिक विकास और रोजगार सृजन **कुछ शहरी केंद्रों तक ही सीमति रह गया है**, जसिसे रोजगार के अवसरों में गंभीर क्षेत्रीय असंतुलन उत्पन्न हो रहा है।
  - नए विकास केंद्रों के रूप में **टयिर-2 और टयिर-3 शहरों के विकास में पछिड़ने के कारण** अस्थरि प्रवासन पैटर्न उत्पन्न हुआ है।
  - बुनयादी ढाँचे और व्यावसायिक वातावरण में राज्य-स्तरीय असमानताएँ असमान विकास को कायम रखती हैं।

## रोजगार से संबंधति सरकार की हालिया पहल क्या हैं?

- **आजीविका और उद्यम हेतु लाभवंचति लोगों की सहायता (SMILE)**
- **PM-DAKSH (प्रधानमंत्री दकषता और कुशलता संपन्न हतिग्राही) योजना**
- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधनियम (MGNREGA)**
- **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)**
- **स्टार्ट-अप इंडिया योजना**
- **रोजगार मेला**
- **इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना- राजस्थान**
- **प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना**
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना**

# भारत गुणवत्तापूर्ण रोज़गार सृजन के साथ आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये क्या उपाय अपना सकता है?

- **MSME पारस्थितिकी तंत्र परिवर्तन:** वन-स्टॉप-शॉप मॉडल का अनुसरण करते हुए परचालन में सुविधा के लिये GST, बैंकिंग और अनुपालन को मिलाकर एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म बनाए जा सकते हैं।
  - प्रत्येक प्रमुख औद्योगिक ज़िले में साझा बुनियादी अवसंरचना, परीक्षण सुविधाओं और सामान्य प्रौद्योगिकी केंद्रों के साथ क्षेत्र-वशिष्ट कलस्टर स्थापति कथि जाना चाहयि।
  - सरलीकृत ऋण मूल्यांकन के साथ वशिष MSME बैंकों और फनिटेक सॉल्यूशन के माध्यम से लक्षति वत्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहयि।
  - समयबद्ध अनुमोदन और डिजिटल ट्रैकिंग के साथ ज़िला स्तर पर एकल खड़िकी अनुमोदन प्रणाली लागू की जानी चाहयि।
  - प्रौद्योगिकी अंतरण और बाज़ार अभगिम के लयि बड़े नगिमों को MSME के साथ जोड़ने के लयि मेंटरशपि नेटवर्क स्थापति कथि जाने चाहयि।
- **कौशल-शकिसा एकीकरण:** मानकीकृत मूल्यांकन तंत्र के साथ सभी व्यावसायकि पाठ्यक्रमों के अंतमि वर्ष में उद्योग इंटरनशपि अनविर्य कथि जा सकते हैं।
  - पाठ्यक्रम प्रासंगकिता और नरितर फीडबैक तंत्र सुनिश्चति करने के लयि ज़िला स्तर पर उद्योग-आधारति कौशल परषिदों का गठन कथि जाना चाहयि।
  - व्यावहारकि परयोजना-आधारति शकिसा के साथ माध्यमकि वदियालय स्तर से डिजिटल कौशल, कोडगि और व्यावसायकि प्रशकिसण शुरू कथि जाना चाहयि।
  - उद्योग साझेदारी और प्लेसमेंट ट्रैकिंग के माध्यम से प्रशकिसण परणामों की रयिल टाइम मॉनटरिगि की जानी चाहयि।
- **स्थानीय आर्थकि विकास:** स्थानीय आर्थकि विकास योजनारें बनाने और उन्हें क्रयिान्वति करने के लयि नगर सरकारों को वत्तीय तथा प्रशासनकि स्वायत्तता प्रदान की जानी चाहयि।
  - एकीकृत लॉजिस्टिक्स और औद्योगिक बुनियादी ढाँचे के साथ टयिर-2 एवं टयिर-3 शहरों को जोड़ने वाले वशिष आर्थकि गलियारे वकिसति कथि जाने चाहयि।
  - नगरपालिका सेवाओं, हरति बुनियादी ढाँचे और डिजिटल सेवाओं पर केंद्रति शहरी रोज़गार गारंटी योजनारें शुरू की जा सकती हैं।
  - स्थानीय उद्योग की आवश्यकताओं और भवषिय के वकिसा क्षेत्रों के अनुरूप शहरी कौशल वकिसा केंद्र बनाए जाने चाहयि।
- **उन्नत वनिरिमाण को बढ़ावा:** संतुलति वकिसा के लयि पूंजी और श्रम-प्रधान दोनों क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रति करते हुए एकीकृत वनिरिमाण क्षेत्र बनाए जा सकते हैं।
  - प्रौद्योगिकी और गुणवत्ता उन्नयन के माध्यम से बड़े नरिमाताओं को स्थानीय MSME के साथ जोड़ते हुए आपूरतकिरत्ता वकिसा कार्यक्रम बनाए जाने चाहयि।
  - श्रम-प्रधान उत्पादन लाइनों को बनाए रखते हुए उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों के लयि वशिष कार्यबल प्रशकिसण कार्यक्रम वकिसति कथि जाने चाहयि।
  - प्रमुख क्षेत्रों में न्यूनतम रोज़गार-से-नविश-अनुपात बनाए रखने वाले नरिमाताओं को प्रोत्साहन प्रदान कथि जाना चाहयि।
- **सामाजकि सुरक्षा आधुनिकीकरण:** सभी कल्याणकारी योजनारें को जोड़ने वाले एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से पोर्टेबल सार्वभौमकि सामाजकि सुरक्षा लागू कथि जा सकते हैं।
  - न्यूनतम मज़दूरी गारंटी और स्वास्थ्य कवरेज सहति एक व्यापक गगि वर्कर सुरक्षा ढाँचा बनाए जाने चाहयि।
  - अनौपचारकि क्षेत्र के श्रमिकों के लयि सरकारी सह-योगदान और आसान नामांकन के साथ वशिष योजनारें तैयार कथि जाने चाहयि। सरलीकृत दावा प्रक्रयिओं के साथ कमज़ोर क्षेत्रों के लयि सूक्ष्म बीमा उत्पाद वकिसति कथि जाने चाहयि।
- **ग्रामीण उद्यम वकिसा:** सरलीकृत वनियमन और बुनियादी ढाँचे के समर्थन के साथ ग्राम पंचायतों को सूक्ष्म उद्यम क्षेत्रों में परिवर्तति कथि जा सकता है।
  - डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से FPO को खाद्य प्रसंस्करण और खुदरा शृंखलाओं से जोड़ते हुए ग्रामीण व्यापार केंद्र स्थापति कथि जाने चाहयि।
  - कृषितकनीक, नवीकरणीय ऊर्जा और ग्रामीण सेवा नवाचार पर ध्यान केंद्रति करते हुए ग्रामीण प्रौद्योगिकी केंद्र बनाए जाने चाहयि।
  - ऋण गारंटी के साथ SHG-बैंक संपर्क के माध्यम से ग्रामीण उद्यमियों के लयि वशिष ऋण उत्पाद वकिसति कथि जाने चाहयि।
- **हरति अर्थव्यवस्था और नौकरी परिवर्तन:** नवीकरणीय ऊर्जा, संधारणीय कृषि और पर्यावरण अनुकूल वनिरिमाण पर ध्यान केंद्रति करते हुए हरति प्रौद्योगिकी प्रशकिसण केंद्र स्थापति कथि जा सकते हैं।
  - हरति उद्यमों के लयि शथिलि संपारश्वकि आवश्यकताओं और लंबी पुनरभुगतान अवधिके साथ वशिष्ट वतितपोषण तंत्र बनाए जाने चाहयि।
  - साझा पर्यावरणीय बुनियादी ढाँचे और अपशषिट प्रबंधन सुविधाओं के साथ हरति औद्योगिक पार्क वकिसति कथि जाने चाहयि।
  - सौर ऊर्जा स्थापना और ईवी रखरखाव सहति हरति नौकरयिों के लयि वशिष रूप से कौशल वकिसा कार्यक्रम शुरू कथि जाने चाहयि।
- **सेवा क्षेत्र आधुनिकीकरण:** स्वास्थ्य सेवा, पर्यटन और शकिसा जैसे उच्च वकिसा वाले सेवा क्षेत्रों के लयि वशिष प्रशकिसण कार्यक्रम वकिसति कथि जा सकते हैं।
  - वैश्वकि मानकों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर ध्यान केंद्रति करते हुए सेवा क्षेत्र उत्कृष्टता केंद्र बनाए जाने चाहयि।
  - वेलनेस ट्रैजिम जैसे उभरते सेवा क्षेत्रों के लयि वशिष पाठ्यक्रम तैयार कथि जाने चाहयि। भारत के प्रतस्पर्द्धी लाभों पर ध्यान केंद्रति करते हुए सेवा क्षेत्र के नरियात संवर्द्धन की रणनीति वकिसति की जानी चाहयि।

## नषिकरष:

भारत की रोजगार चुनौती के लिये एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। **संरचनात्मक मुद्दों को हल करके, कौशल विकास को बढ़ावा देकर, समावेशी विकास को बढ़ावा देकर और सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ करके** भारत आर्थिक विकास एवं गुणवत्तापूर्ण रोजगार सृजन के बीच के अंतर को कम कर सकता है। इससे न केवल समान विकास सुनिश्चित होगा बल्कि भारत मानव पूंजी विकास में वैश्विक नेतृत्वकर्त्ता के रूप में भी स्थापित होगा।

????? ???? ?????:

**प्रश्न.** सतत आर्थिक वृद्धि के बावजूद, भारत को गुणवत्तापूर्ण और समावेशी नौकरियाँ सृजित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत में नौकरी सृजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विश्लेषण कीजिये और इन चुनौतियों से निपटने के लिये नीतित उपाय भी सुझाइये।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

**प्रश्न.** प्रधानमंत्री MUDRA योजना का लक्ष्य क्या है? (2016)

- (a) लघु उद्यमियों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली में लाना
- (b) निर्धन कृषकों को विशेष फसलों की कृषि के लिये ऋण उपलब्ध कराना
- (c) वृद्ध एवं नसिसहाय लोगों को पेंशन देना
- (d) कौशल विकास एवं रोजगार सृजन में लगे स्वयंसेवी संगठनों का नधियन (फंडिंग) करना

**उत्तर:** (a)

**प्रश्न.** प्रच्छन्न बेरोजगारी का सामान्यतः अर्थ होता है कि— (2013)

- (a) लोग बड़ी संख्या में बेरोजगार रहते हैं
- (b) वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध नहीं है
- (c) श्रमिक की सीमांत उत्पादकता शून्य है
- (d) श्रमिकों की उत्पादकता नीची है

**उत्तर:** (c)

??????:

**प्रश्न.** भारत में सबसे ज्यादा बेरोजगारी प्रकृति में संरचनात्मक है। भारत में बेरोजगारी की गणना के लिये अपनाई गई पद्धतिका परीक्षण कीजिये और सुधार के सुझाव दीजिये। (2023)

**प्रश्न.** हाल के समय में भारत में आर्थिक संवृद्धि की प्रकृति का वर्णन अक्सर नौकरीहीन संवृद्धि के तौर पर किया जाता है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क प्रस्तुत कीजिये। (2015)